विभिन्न जातीय समूहों में शैक्षिक वंचन एवम् शैक्षिक दुश्चिंता का अध्ययन

*कल्पना राय**

वंचन से आशय है सुविधा रहित होना । हमारे समाज अथवा देश में विभिन्न प्रकार के वंचित वर्ग दिखाई पड़ते है जैसे – सामाजिक दृष्टि से वंचित , शारीरिक दृष्टि से वंचित अर्थात विकलांग , आर्थिक दृष्टि से वंचित अर्थात गरीब , मानसिक विकलांग , सांस्कृतिक दृष्टि से वंचित आदि।

लैगमीयर (1972) आधारभूत आवश्यकताओं की दीर्घकाल तक अपर्याप्त संतुष्टि को वंचन के रुप में वर्णित करते हैं। वंचन के लिये कौन से कारण उत्तरदायी है और उस कारण का निवारण कैसे किया जाय, इस परिप्रेक्ष्य में विगत वर्षो में भारत में छात्रों पर काफी शोध किया गया है और यह पाया गया कि छात्रों में असंतोषजनक पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक स्थिति, वंचन के लिए उत्तरदायी है।

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के रूप में छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिता को लिया गया है। शैक्षिक वंचन छात्रों में अपर्याप्त शैक्षिक सुविधाओं में कमी को प्रदर्शित करता है। अधिकतर यह देखा गया है कि सरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों की स्थिति ठीक नहीं होती है। निःशुल्क शिक्षा होने के बाद भी इसके प्रति अभिभावक की उदासीनता बनी रहती है। गरीब तथा पिछड़े जाति के छात्र–छात्रायें इन स्कूलों को अधिक वरीयता देते है और अपर्याप्त शैक्षिक सुविधाओं में कमी के कारण वे अपने असफलता से हमेशा हतोत्साहित रहते हैं।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के रूप में छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंत को लिया गया है जिसका उद्देश्य निम्नवत है :–

- सामान्य जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
- पिछड़ी जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
- सामान्य जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
- पिछड़ी जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

---

* शोध छात्रा (नेट),शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

परिकल्पना :– अध्ययन के उददेश्यों को प्राप्त करने हेतु निम्न परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

- सामान्य जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- पिछड़ी जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- सामान्य जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- पिछड़ी जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है

उपकरण :– प्रदत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. शैक्षिक दुश्चिन्ता के मापन हेतु कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित शैक्षणिक दुश्चिन्ता चिन्ता मापनी का प्रयोग किया गया है।
2. वंचन के मापन हेतु कल्पलता पाण्डेय और करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित 'वंचन मापनी' का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की विधि :–

अध्ययन हेतु वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समग्र :–

वाराणसी शहर में माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के समस्त छात्रों एवम् छात्राओं को समग्र के रूप में लिया गया है।

प्रतिदर्श :–

प्रतिदर्श चयन हेतु सम्भाव्यता प्रतिचयन विधि को अपना कर उसके प्रमुख प्रकार बहुपदीय यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया गया। इसके अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के 400 विद्यार्थियों का चयन कर 200 सामान्य जाति और 200 पिछड़ी जाति के छात्र–छात्राओं पर वंचन मापनी को प्रशासित किया गया। (मध्यमान $\pm$ मानक विचलन) के आधार पर 27 उच्च वंचित 27 निम्न वंचित छात्र–छात्राओं में 27 उच्च वंचित सामान्य जाति के छात्र–छात्राओं व 27 उच्च वंचित पिछड़ी जाति के छात्र–छात्राओं को अध्ययन के मानक समूह के रूप में चुन लिया गया। इन सभी विद्यार्थियों पर शैक्षिक दुश्चिंता मापनी को प्रशासित किया गया। अध्ययन के उपरान्त यह पाया गया कि 4–4 विद्यार्थियों ने शैक्षिक दुश्चिंता मापनी पर सही प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त किया। अतः 25 सामान्य जाति के उच्च वंचित छात्र, 25 पिछड़ी जाति के उच्च वंचित छात्र, 25 सामान्य जाति की उच्च वंचित छात्राएं तथा 25 पिछड़ी जाति की उच्च वंचित छात्राओं को अध्ययन के रूप में लिया गया।

प्रदत्त संग्रह :–

सर्वप्रथम चयनित विद्यार्थियों पर शैक्षिक दुश्चिन्ता मापनी प्रशासित की गई तथा उससे सम्बन्धित प्रदत्तों को संकलित किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण व निर्वचन :– विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक वंचन व उनकी शैक्षिक दुश्चिंता में सहसम्बन्ध की गणना की गई है जिसका विवरण तालिका –1 निम्नवत है :

तालिका –1: सामान्य जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिता के मध्य सहसम्बन्ध

आश्रित चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शैक्षिक दुश्चिंता	0.5302	0.01

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सामान्य जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन एवं शैक्षिक दुश्चिता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.5302 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि सामान्य जाति के छात्रों की उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुश्चिता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है, अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुश्चिंता में धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् सामान्य जाति के छात्रों में शैक्षिक वंचन के साथ–साथ शैक्षिक दुश्चिंता बढ़ती है।

तलिका –2: पिछड़ी जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध

आश्रित चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शैक्षिक दुश्चिंता	0.5163	0.01

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति के छात्रों की उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुश्चिता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.5163 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि पिछड़ी जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन व उनकी शैक्षिक दुश्चिंत के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता हैं, अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पिछड़ी जाति के छात्रों के उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुश्चिन्ता में धनात्मक सहसम्बन्ध है। अर्थात् पिछड़ी जाति के छात्रों में शैक्षिक वंचन के साथ–साथ शैक्षिक दुश्चिंता बढती है।

तालिका –3: सामान्य जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन शैक्षिक दुश्चिंता के गध्य सहसम्बन्ध

आश्रित चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शैक्षिक दुश्चिंता	0.6129	0.01

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सामान्य जाति के छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुशिंता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.6129 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है अतः यह परिकल्पना कि सामान्य जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन व उनकी शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है, अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुश्चिंता में धनात्मक सहसम्बन्ध है। अर्थात सामान्य जाति की छात्राओं में शैक्षिक वंचन के साथ – साथ शैक्षिक दुश्चिंता बढ़ती है।

तालिका –4 : पिछड़ी जाति की छात्राओं की उच्च शैक्षिक वंचन और शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध

आश्रित चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शैक्षिक दुश्चिंता	0.5302	0.01

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि पिछड़ी जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन व शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.5302 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि पिछड़ी जाति के छात्राओं के शैक्षिक वंचन व उच्च शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है, अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि पिछड़ी जाति की छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन एवं शैक्षिक दुश्चिंता में धनात्मक व सहसम्बन्ध है। अर्थात् पिछड़ी जाति की छात्राओं में उच्च शैक्षिक वंचन के बढ़ने से उनकी शैक्षिक दुश्चिंता भी बढ़ती है।

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण से हमें यह ज्ञात होता है कि सामान्य जाति एवम् पिछड़ी जाति के छात्र–छात्राओं के उच्च शैक्षिक वंचन एवं शैक्षिक दुश्चिंता के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध है। अर्थात् शैक्षिक वंचन के बढ़ने पर शैक्षिक दुश्चिंता में भी बढ़ोत्तरी होती है।

इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि शैक्षिक उपलब्धताओं में कमी, उचित वातावरण का अभाव एवम् माता–पिता द्वारा शैक्षिक कार्यो में सहयोग न मिलने के कारण शैक्षिक रूप से उच्च वंचित छात्र छात्राओं में शैक्षिक दुश्चिंता अधिक होती है। सामान्य जाति के छात्र–छात्राओं में सरकार की आरक्षण नीति उनके शैक्षिक दुश्चिंता व वंचन में बढ़ोत्तरी कर रही है। रथ (1974) के अध्ययन के अनुसार निचली जाति के छात्र–छात्राओं में असुरक्षा की भावना अधिक होती है। सम्भवतः पिछड़ी जाति के छात्र–छात्राओं को पर्याप्त मात्रा में सुविधायें नहीं मिल पाती हैं इसीलिए इस वर्ग में आज भी असुरक्षा की भावना शैक्षिक दुश्चिंता के बढ़ने का एक महत्वपूर्ण का कारण है। पिछड़ी जाति की छात्राओं की मातायें उनको पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती है। त्रिपाठी (1978) के निष्कर्ष से इस निष्कर्ष को अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ा जा सकता है कि शील गुण दुश्चिंता और वंचन में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध है। हैविगर्स्ट हिलमैन के अनुसार गरीब परिवार के छात्रों का वातावरण उनके अच्छे जीवन यापन और उपलब्धि पर प्रभाव डालता है।

अतः सामान्य जाति की छात्र–छात्राओं तथा पिछड़ी जाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक दुश्चिंता व उच्च शैक्षिक वंचन को कम करने के लिए उनके सामाजिक परिवेश को भी बदलने की जरूरत है। उनमें यह भावना न उत्पन्न हो कि किसी जाति विशेष को ज्यादा सुविधा प्राप्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- गिलफोर्ड जे0पी0 (1950): फण्डामेण्टल स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशनल मैकग्रा हिल।
- माथुर एस0एस0: शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- चौहान,एस0एस0(1983): साइकोलॉजी ऑफ एडोलोसेन्स,एलाइड पब्लिशर्स नई दिल्ली।
- बेस्ट एवं काहन (2002): रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली, 7th संस्करण, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड।
- गुप्ता,एस0पी0(2001):भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
- सिंह,नरेन्द्र कुमार(1993): अ साइको सोशल स्टडी ऑफ द डिप्राइव्ड एण्ड द नॉन–डिप्राइव्ड
- एडोलेसेन्स, पी0 एच0 डी0, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- सिंह, रेनू (1995):इन्वेस्टीगेशन ऑफ द रिलेशनशिप बिटवीन वैल्यूज एण्ड कम्यूनल एटीट्यूड अमन्ग यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स एण्ड टीचर्स, पी0एच0डी0, बी0एच0यू0।
- मजूमदार, अम्मू मेनोन (1964): सोशल वेलफेयर इन इण्डियाः बाम्बे (एशिया पब्लिशिंग हाउस)।
- लैंगमेयर जें (1972): पर्सनलिटी ऑफ डिप्राइव्ड चिल्डेन इन एफ जे मानक्स (संपा) डैटरमिनेन्टस ऑफ बिहेविअर डेवलपमेन्ट, न्यूयार्क अकेडमिक प्रेस।
- रथ, आर (1974): सोशल आइसोलेशन टू स्टेग्नेशन, अ स्टडी ऑफ शीड्यूल कास्ट ग्रुप सोशल एक्शन, 24 पी पी 101–116।